रजिस्ट्रेषन संख्या :– R.N.I. 36355 / 79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67 / 2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में
सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127 / 204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –36 ● अंक –24 ● कानपुर 16 से 31 दिसम्बर 2015 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य –₹100

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के पंजीकरण का निस्तारण शीघ्र

बोर्ड के चिकित्सक ही होंगे अधिकारी

प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय कर रहे इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के पंजीकरण का मामला जो शासन के पास निस्तारण के लिए पड़ा था उस पर शीघ्र ही निर्णय आने की सम्भावना है यह जानकारी बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के एक प्रतिनिधि मण्डल को भेटवार्ता में दी आपको बताना उचित होगा कि प्रदेश में चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए सभी चिकित्सकों को अपनी परिषद में पंजीयन के साथ साथ जो चिकित्सक जिस जनपद में प्रैक्टिस करता है उसे उस जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के कार्यालय में अपना पंजीयन कराना पड़ता है तभी वह अधिकृत चिकित्सक की भाँति चिकित्सा व्यवसाय कर सकता है। यद्यपि उत्तर प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के लिए 4 जनवरी, 2012 को शासनादेश जारी कर प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को चिकित्सा अभ्यास करने की अनुमति प्रदान की थी इस आदेश के क्रियान्वयन हेतु प्रदेश के चिकित्सा महानिदेशक द्वारा 2 सितम्बर, 2013 को प्रदेश के सभी अपर निदेशकों स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण को पत्र लिखकर निर्देशित किया था कि बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के पक्ष में 4 जनवरी 2012 को जो शासनादेश जारी हुआ था उस आदेश का अनुपालन शासकीय आदेशानुसार कराया जायें इस पत्र के आने के बावजूद भी प्रदेश के कुछ मुख्य चिकित्साधिकारियों द्वारा महानिदेशक द्वारा जारी आदेश को मानने में आनाकानी की गयी और इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के साथ सौतेला व्यवहार जारी रहा, कहीं कहीं तो यह उत्पीड़न की सीमा तक पहुंच गया अधिकारिता के उपरान्त भी प्रदेश का इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अधिकार से प्रैक्टिस नहीं कर पा रहा था इसका एकमात्र कारण था कि बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने सदैव से ही अपने चिकित्सकों को निर्देशित किया है कि प्रैक्टिस करने के लिए जो आवश्यक प्रतिबन्ध हैं उनका अवश्य पालन करना चाहिये तभी वैधानिक रूप से चिकित्सा व्यवसाय कर सकते हैं प्रदेश में वर्तमान परिस्थिति में मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन होना आवश्यक है इसलिए बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने अपने सभी चिकित्सकों को निर्देश दिया कि जो अधिकृत व पंजीकृत चिकित्सक हैं वह अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में अवश्य करें तभी प्रैक्टिस करें इस आशय की सूचना बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा सभी पंजीकृत चिकित्सकों को डाक के माध्यम से प्रेषित की, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अधिकांशतः ग्रामीण व सुदूरवर्ती क्षेत्र से सम्बन्धित हैं इसलिए उसके पास सूचनायें भी विलम्ब से पहुँचती हैं। हर चिकित्सक तक सूचना पहुचाने के लिए बोर्ड द्वारा यथा सम्भव प्रयास किये गये हैं चिकित्सकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए चिकित्सक अधिकारिता जागरूकता अभियान भी प्रारम्भ किया गया और गोष्ठियों के माध्यम से,सम्मेलनों के माध्यम से भरपूर प्रयास किया गया कि हर चिकित्सक अपने अधिकारों से भलीभांति परिचित हो जाये प्रयास रंग भी लाये और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों ने पूरे उत्साह के साथ अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के कार्यालय में प्रेषित करना प्रारम्भ किया। कुछ चिकित्साधिकारियों ने तो आवेदन स्वीकार कर लिये और कुछ मुख्य चिकित्साधिकारियों के कार्यालय के कर्मचारियों ने आवदेन लेना तो दूर हमारे चिकित्सकों का मानसिक उत्पीड़न करना प्रारम्भ किया यह जानकारी जैसे ही बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 को प्राप्त हुई। बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इस मामले को गम्भीरता से लिया और उत्तर प्रदेश शासन को पत्र लिखकर अवगत कराया कि जब 4 जनवरी 2012 को प्रदेश शासन द्वारा शासनादेश जारी किया जा चुका है और जिसके क्रियान्वयन के लिए 2 सितम्बर,2013 को महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें उ0प्र0 द्वारा सभी मण्डल अपर निदेशकों को निर्देश भी जारी किये जा चुके हैं इसके उपरान्त भी जनपद के मुख्यचिकित्साधिकारियों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के पंजीयन आवेदन स्वीकार नहीं किये जा रहे हैं जिसके कारण प्रदेश का इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक उहापोह की स्थिति में है इसलिए इस स्थिति से उबरने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा कोई स्पष्ट निर्देश जारी किये जायें। प्रदेश शासन द्वारा मामले की गम्भीरता को देखते हुए व इस समस्या के समाधान के लिए महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवायें उ0प्र0 से इस विषय पर अपनी स्पष्ट आख्या मांगी थी सरकार के इस सकारात्मक रूख से प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथों को एक नई ऊर्जा मिली थी। डा0 इदरीसी के अनुसार प्राप्त जानकारी के आधार पर इस विषय पर सकारात्मक रूख अपनायें हुए हैं और शीर्घ ही इस मामले का निस्तारण सम्भव है जैसे ही यह मामला निपटता है प्रदेश का सारा इलेक्ट्रो होम्योपैथ अधिकारिता पूर्वक प्रैक्टिस करने के लिए मुख्य चिकित्साधिकारी के कार्यालय में पंजीयन हेतु आवेदन देने को तत्पर हो जायेगा। डा0 इदरीसी ने बताया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का भविष्य उज्जवल है हम आज भी सबका साथ सबका विकास की धारणा पर विश्वास करते हैं और हम यह स्वीकारते भी हैं कि हर चिकित्सक का विकास होना चाहिये। क्योंकि जब चिकित्सक अधिकार पूर्वक पूरी निष्ठा के साथ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा विधा से चिकित्सा व्यवसाय करेगा तो इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति के विकास में देर नहीं लगेगी। लेकिन जितनी जिम्मेदारी शीर्ष संगठन की होती है उससे कही ज्यादा जिम्मेदारी उस चिकित्सक की होती है जो चिकित्सा व्यवसाय कर रहा होता है। हमें कहते हुए अफसोस होता है कि इतना सबकुछ होने के उपरान्त भी इलेक्ट्रो होम्योपैथ अभी भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास की जितनी जिम्मेदारी हमारी है उसका कुछ दायित्व चिकित्सकों का भी है। यदि दोनों लोग मिलकर सकारात्मक कार्य करते रहे तो परिणाम अच्छे से और अच्छे प्राप्त होंगे। डा0 इदरीसी ने उन लोगों को अगाह किया जो आज भी बिना पंजीयन के चिकित्सा व्यवसाय में लिप्त हैं उन्हें चाहिये कि ऐसे चिकित्सक अविलम्ब अपना पंजीयन करा लें और जो चिकित्सक बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से पंजीकृत हैं और जिनके पंजीयन की समय सीमा समाप्त हो चुकी है वे भी अविलम्ब अपना नवीनीकरण करा लें ताकि भविष्य में उनको किसी तरह की परेशानी का सामना न करना पड़े। कुछ ऐसे तथ्य भी हैं जो लगातार यह कह कर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों को भ्रमित करते रहते हैं कि प्रदेश में उन चिकित्सकों का पंजीयन मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में होना चाहिये जो चिकित्सा पद्धतियां मान्यता प्राप्त हैं, चूंकि इलेक्ट्रो होम्योपैथी मान्यता प्राप्त नही है इसलिए इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सकों को मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन हेतु आवेदन नहीं प्रस्तुत करना चाहिये और अपने तर्क को सत्य साबित करने के लिए 22 जनवरी, 2015 के माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश को ढाल बनाते हैं यह लोग अर्ध सत्य बात कहते हैं इस तरह की बात कहने वालों को 22 जनवरी, 2015 के आदेश के अधिकार के परिप्रेक्ष्य में गुजरात हाईकोर्ट और मुम्बई हाईकोर्ट का 2 दिसम्बर 2015 के आदेश का अवलोकन करना चाहिये और उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में कुछ भी कहने से पूर्व माननीय हाईकोर्ट द्वारा अवमानना वाद संख्या 820 / 2002 श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव बनाम श्री ए0 पी0 वर्मा मुख्य सचिव उ0प्र0 व अन्य में दिये गये आदेश का अवलोकन करें तब उनकी समझ में आयेगा कि उत्तर प्रदेश में मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन न कराकर प्रैक्टिस करना न केवल अवैधानिक है बल्कि माननीय न्यायालय की अवमानना भी है मान्यता और अधिकारिता में उन्हें अन्तर भी समझना चाहिये, चूंकि मान्यता और अधिकारिता में एक ही अन्तर होता है वह अन्तर होता है सरकारी सेवाओं में सेवायोजन का, यदि अधिकारिता पूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करना है तो प्रदेश में प्रचलित कानूनों का पालन करना ही होगा आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी को दिशा मिल चुकी है और उसे अधिकारपूर्वक कार्य करने का पूरा अवसर भी है अब यह हम पर है कि हम इन अवसरों का लाभ उठा पाते है या नहीं हम अपने चिकित्सकों को पुनः जागरूक करना चाहेंगे कि व्यर्थ की बातो में न पड़कर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हों और निडर होकर प्रैक्टिस करने के लिए उन सारे नियमों और कानूनो का पालन करें जो अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों द्वारा किया जाता है हम अपेक्षा करते हैं कि प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अब उहापोह से बाहर निकलकर अधिकारपूर्वक चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो जायें क्योंकि जब तक मनुष्य में मानसिक दृढ़ता नहीं होती है तब तक किसी भी कार्य को अन्तिम रूप नहीं दिया जा सकता। यदि हमारे चिकित्सक अब भी जागरूक नहीं हुए तो वह बरसों पिछड़ जायेंगे फिर उन्हें उबरने में बहुत समय लग जायेगा लक्ष्य की प्राप्ति की तरफ बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने जो कदम बढ़ाये थे उस पर लगातार हम सफल हो रहे हैं और इसके पीछे पूरे प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की प्रेरणा और सदभावना है हमारी अपेक्षा अपने चिकित्सकों से भी है कि जिस निष्ठा और लगन से हम लगे हैं उसी निष्ठा और लगन की जरूरत चिकित्सकों से भी है। नया वर्ष हम सभी लोगो के लिए मंगलमय होगा। यह हमारा अभीष्ट है। पंजीयन की समस्या का समाधान निश्चित है।

इसमें कोई दो राय नहीं है।

- चिकित्सकों के पंजीयन का निस्तारण अवश्य
- अधिकारिता से ही हो सकेगी प्रैक्टिस
- बोर्ड के चिकित्सकों को मिलेगा लाभ
- अपंजीकृत / अनवीनीकृत न कर सकेंगे प्रैक्टिस
- नहीं होगा अब कोई उत्पीड़न
- हमारा लक्ष्य – सबका साथ सबका विकास
- उन्नत होगा हमारा अगला पड़ाव

अवधारणाओं पर चर्चा

एक पुरानी कहावत है कि निठल्ला आदमी इस कोठी का धान उस कोठी में करता है अर्थात जब काम नहीं हो तो कुछ ऐसा करो जिससे स्वयं की व्यस्तता बनी रहे, आज कल इलेक्ट्रो होम्योपैथी में यह कहावत अक्सर चरितार्थ होती दिखाई पड़ जाती है अब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथी में सबकुछ ठीक–ठाक चल रहा है, काम करने के पूरे अवसर हैं और जहाँ कहीं थोड़े बहुत स्वनिर्मित अवरोध हैं वह भी स्वतः समाप्त होते जा रहे हैं लेकिन फिर भी कुछ लोग ऐसे विचार प्रकट कर देते हैं जो एक नई दिशा देने लगते हैं, लिखने का आशय यह है कि जहाँ पर सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा हो प्रयास करना चाहिये कि चलती हुई चीज़ और अच्छे ढंग से चले, उसमें कुछ ऐसे विचार या तत्व शामिल होने चाहिये जो चलती हुई गति में और तेज़ी लावें यही किसी भी चीज़ के विकास का पहला पहलू होता है। चिकित्सा पद्धतियां रोज़–रोज़ नहीं खोजी जा सकती हैं, चूँकि चिकित्सा पद्धतियां मानव शरीर से जुड़ी हुई हर घटना पर बहुत तेज़ निगाह रखती हैं इसलिये जो भी वैज्ञानिक/शोधकर्ता किसी नई पद्धति को जन्म देता है वह भी हर पहलू पर गम्भीरता से चिन्तन करता है और लाभ–हानि हर विषय पर प्रयोग करने के उपरान्त ही किसी अवधारणा को जन्म देता है तब उसी अवधारणा के आधार पर आगे का कार्य सम्पादित होता है। इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक काउण्ट सीज़र मैटी ने विभिन्न पहलुओं पर हर कोंण से अध्ययन करने के बाद ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी की अवधारणा बनाई होगी इसी अवधारणा पर कार्य करते हुये लगभग डेढ़ सौ वर्षों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी पूरे विश्व की मानवता की सेवा कर रही है। इसी के परिणामस्वरुप इलेक्ट्रो होम्योपैथी को चिकित्सा पद्धति का दर्जा प्राप्त हो सका है सन् 1865 में काउण्ट सीज़र मैटी ने कॉम्पलेक्सा! काम्पलैक्सिस!! क्युरेन्टर!!! की अवधारणा के आधार पर कार्य किया और उन्हें आशातीत सफ़लता भी प्राप्त हुई तत्कालीन चिकित्सकों ने मैटी की इस अवधारणा को स्वीकार किया और उसपर कार्य करते हुये यह निश्चित किया कि यह जो अवधारणा मैटी द्वारा दी गई है शरीर के लिये उपयोगी व लाभकारी है। तमाम सारे वैज्ञानिक आये और गये पर किसी ने भी मैटी की इस अवधारणा पर कोई प्रतिकूल टिप्पणी नहीं की, धीरे–धीरे समय बीतता गया और इस अवधारणा के आधार पर कार्य होता रहा, यह सत्य है कि विज्ञान निरन्तर नये शोध करता रहता है और उनसे प्राप्त परिणामों के आधार पर उन्हें जनोपयोगी बनाया जाता है। हमें यह स्वीकार करने में कतई संकोच नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में अभी तक ऐसा कोई शोध नहीं हो पाया है जिससे की कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन हो सकता। इलेक्ट्रो होम्योपैथी में शोध न हो पाना ही इसके विकास न हो पाने का मूल कारण है, शोध होता भी तो कैसे होता ?जिन परिस्थतियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी जीवित रही वह कोई कम बात नहीं है, आज डेढ़ सौ वर्षों के लम्बे संघर्ष के बाद भारतवर्ष में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शासकीय व वैधानिक स्थिति मज़बूत हुई है अभी भी इस क्षेत्र में काफ़ी काम होना बाकी है ऐसे में ज़रुरत है कि धिक से अधिक कार्य किया जाये क्योंकि जब कार्य होगा तभी इस पद्धति से होने वाले लाभ हानि का सही–सही मूल्यांकन हो सकेगा, क्योंकि आज स्थिति यह है कि जनता के बीच तो बहुत दूर की बात है हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों के मन में भी विश्वास नहीं है, जब स्वयं पर भरोसा नहीं होता है तो दूसरों का विश्वास कैसे पाया जा सकता है ?इसलिये यह परम आवश्यक है कि हम मैटी की दी हुई अवधारणा पर अटल रहते हुये कार्य करें और जो लोग बेवजह इन अवधारणाओं पर बेकार की टिप्पणी करते हैं वे कभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सच्चे सेवक नहीं हो सकते हैं। कारण जब अपने आधार पर ही विश्वास नहीं होता तो उस आधार पर कोई कार्य कैसे कर सकता है ?

ऐसे तत्वों से और ऐसी विचारधाराओं से बचकर रहते हुये कार्य करते रहें और इलेक्ट्रो होम्योपैथी को विकसित करने का प्रयास करें।

लुप्त होती सम्वेदनायें

हर समाज में सम्वेदनाओं का कुछ न कुछ स्थान अवश्य होता है क्योंकि भावनाओं से ही सम्वेदनाओं का जन्म होता है व्यक्ति समाज की एक इकाई है और इस समाज में तरह–तरह की कार्यप्रणालियां विकसित हैं और हर कार्यप्रणाली का अपना–अपना क्षेत्र होता है, जो व्यक्ति जिस क्षेत्र में कार्य करता है उस व्यक्ति का उस क्षेत्र विशेष से मानसिक, शारीरिक व आर्थिक जुड़ाव के साथ–साथ भावनात्मक सम्बन्ध भी होता है। भावनात्मक सम्बन्धों के कारण ही वह व्यक्ति अपना सबकुछ उस कार्यक्षेत्र को सौंप देता है जिस क्षेत्र विशेष में वह कार्य कर रहा होता है। हमारे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति भी लाखों लोगों का कार्यक्षेत्र है जो तन, मन, धन के साथ इस कार्यक्षेत्र में लगे हैं, इन लाखों लोगों का भावनात्मक सम्बन्ध भी इस चिकित्सा पद्धति से है तभी तो सम् और विषम दोनों परिस्थितियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का साथ नहीं छोड़ते हैं और इसी आधार पर उनको देखकर नये लोग भी इस विधा से जुड़ने का प्रयास करते हैं इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य करने के बहुत क्षेत्र हैं और आज के परिदृष्य में लगभग हर क्षेत्र में कार्य हो रहा है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में उन सभी का योगदान है जिन्होंने किसी भी क्षेत्र में कार्य किया है उनकी तनमयता और उनके समर्पण को हम सभी प्रणाम करते हैं।

आजादी के पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में कितने लोग काम करते थे ?यह तो उंगलियों में गिना जा सकता है लेकिन आज़ादी के बाद इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों की संख्या में काफ़ी वृद्धि हुई है यदि हम आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद किये हुये कार्यों पर समग्र दृष्टि डालते हैं तो यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि पुराने लोगों द्वारा किये गये कार्यों से ही प्रेरित होकर नये लोग इससे जुड़े और इन लोगों ने महत्वपूर्ण कार्य किये हैं।

आज से पचास–साठ साल पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी की शिक्षा, चिकित्सा कुछ ही लोगों के हाथों में थी जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रसार नहीं हो पा रहा था लेकिन सत्तर के दशक में कुछ ऐसे उत्साही नवयुवक इस चिकित्सा पद्धति से जुड़े जिनके भरसक प्रयासों से इलेक्ट्रो होम्योपैथी का भरपूर प्रसार हो सका, पहले सिर्फ़ उत्तर प्रदेश, बिहार व बंगाल राज्य तक इलेक्ट्रो होम्योपैथी सीमित थी दक्षिण के राज्यों में सिर्फ़ कर्नाटक राज्य में कार्य हो रहा था लेकिन जैसे ही इन नवजवानों नें इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कमान अपने हाथ में ली वैसे ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी न केवल सम्पूर्ण भारतवर्ष में बल्कि भारत से जुड़े पड़ोसी देशों में पुष्पित पल्लवित होने लगी, शनैः–शनैः इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आधारभूत ढांचा ही बदलने लगा, चिकित्सा का क्षेत्र हो या शिक्षा का क्षेत्र हो, साहित्य का क्षेत्र हो या फिर औषधि निमार्ण का हर क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन दिखाई देने लगा और सन् पिछत्तर से लेकर सन् नब्बे तक इन पन्द्रह वर्षों के कालखण्ड में इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर बहुत कार्य हुआ है परिणाम यह हुआ कि जहां इलेक्ट्रो होम्योपैथों की संख्या सैकड़ों में हुआ करती थी वह बढ़कर लाखों में पहुँच गई जब संख्या बढ़ती है तो आत्म विश्वास में भी वृद्धि होती है और लोग अपने अधिकारों के प्रति भी जागरुक होने लगते हैं।

यद्यपि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से चिकित्सा व्यवसाय करने में कोई परेशानी नहीं थी लेकिन जिस तरह से अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों को सरकारी नियन्त्रण के माध्यम से शासकीय आवरण पहनाया हुआ था उसी शासकीय आवरण की माँग इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी दिखाई देने लगी, लगभग हर प्रान्त से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के सरकारी संरक्षण की माँग उठने लगी, जगह–जगह धरने, प्रदर्शन व आन्दोलन होने लगे यह आन्दोलन केवल राज्यों तक ही सीमित नहीं रहे इसका स्वरुप बढ़ता हुआ राष्ट्रीय रुप ले चुका था, सरकारें अजीबो गरीब धर्मसंकट में थीं, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में दमनात्मक कार्यवाही होने लगी राज्य सरकारों द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को रोकने के लिये शासनादेश जारी होने लगे, लेकिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी का परिवार अब काफ़ी बढ़ चुका था उसकी भावनायें परवान चढ़ रही थीं ऐसों को रोकना सरकार के बस की बात नहीं थी, तब राज्य सरकारों नें इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों की जाँच की आड़ में अपने अधिकारियों से उत्पीड़न की कार्यवाही प्रारम्भ करा दी तब इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने न्यायालय का सहारा लिया और 18 नवम्बर, 1998 को माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय ने एक ऐसा ऐतिहासिक निर्णय दिया जो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के क्षेत्र में आज भी मील का पत्थर है, इस आदेश को केन्द्र सरकार सहित सभी राज्य सरकारों व केन्द्रशासित प्रदेशों को अपने–अपने यहाँ क्रियान्वित करना था लेकिन सरकारें सरकारें होती हैं आसानी से कोई बात नहीं माना करती हैं वे सर्वोच्च न्यायालय गईं पर वहां पर भी न्यायपालिका विचलित नहीं हुई और पूर्व के आदेश को यथावत रखा।

हारकर भारत सरकार ने एक उच्च स्तरीय समिति गठित की जिसे इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता के लिये रिपोर्ट देनी थी 25 नवम्बर, 2003 को भारत सरकार की इस समिति ने जो सिफ़ारिशें दीं उनकी गलत व्याख्या होने के कारण पूरे देश में एक नई दिशा निर्मित हो गई परन्तु आशा और निराशा के बीच झूलते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक के रणबांकुरों नें हार नहीं मानी साढ़े सात साल के लम्बे अन्तराल के बाद 05 मई, 2010 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी में प्रकाश की नई किरण दिखाई पड़ी और नज़र आने लगा कि अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर ज़्यादा दिनों तक व्यवधान नहीं डाला जा सकता और इसी आत्म विश्वास का परिणाम था कि 21 जून, 2011 को भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्रालय ने एक अति स्पष्ट आदेश जारी कर पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा, शिक्षा व अनुसन्धान की राह खोल दी, यह सबकुछ आसानी से प्राप्त नहीं हुआ है इसके पीछे उन इलेक्ट्रो होम्योपैथों का तन–मन–धन व समय सबकुछ लगा है जो वास्तव में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये सबकुछ निछावर कर देने को तैयार हैं यह सत्य है कि 21 जून, 2011 का आदेश संस्था विशेष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़

शेष पेज 3 पर

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को व्यावसायिक बनाना होगा

वर्तमान युग अर्थ का युग है हर व्यक्ति अर्थ के पीछे दौड़ रहा है इसलिये वह वही कार्य करना चाहता है जिसमें अधिक से अधिक आर्थिक आगमन हो सके इसी अर्थ पाने के चक्कर में हर वयक्ति अर्थकरी ज्ञान ही अर्जित करना चाहता है, समाज सेवा व ज्ञान के लिये विद्या आज के परिदृश्य में प्रासंगिक नहीं दिख रहा है प्रासंगिक हो भी तो कैसे ?जिस तेज़ी के साथ सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन आ रहा है उनके अनुरुप खुद को ढालने के लिये धन की आवश्यकता होती है बिना धन के आज के युग में कुछ भी सम्भव नहीं है भावनाओं के लिये वही स्थान है जहाँ धन का आवागमन दिखता है आज के युग में समाज सेवा भी बिना धन के सम्भव नहीं है इन सब बातों से स्पष्ट होता है कि जीवन का संचालन बिना धन के सुचारु रुप से सम्भव नहीं है। यह सब बातें लिखने का आशय यह है कि आज इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत में जिस नीरस्ता ने स्थान बना लिया है वह दूर होने का नाम ही नहीं ले रहा है यह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये एक गम्भीर विषय है इस विषय पर गम्भीरता से विचार होना चाहिये आज से पन्द्रह वर्ष पहले पूरे देश में हज़ारों छात्र–छात्रायें पूरे मनोयोग से इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का अध्ययन करते थे और अध्ययन के उपरान्त इलेक्ट्रो होम्योपैथी को अपने जीवन यापन का आधार बनाते थे लेकिन गुज़रे वर्षों में जो कुछ भी घटा उसने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की तस्वीर को एकदम से बदल कर ही रख दिया है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये जिन लोगों में गज़ब का उत्साह था आज वह उत्साह दूर–दूर तक नज़र नहीं आता है, इसकी क्या वजह है ?सामान्य अर्थों मे सब अपने–अपने हिसाब से व्याख्या करते हैं पर इसके मूल में क्या है ?यह ज़रुर जानना आवश्यक है। आज से बीस साल पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी सिर्फ इसलिये ज़िन्दा थी क्योंकि लोगों में यह भाव था कि आने वाले समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी अन्य प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों की भांति शासकीय संरक्षण प्राप्त होगा यदि हम सबकुछ जानते हों तो आज स्थिति यह है कि देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये क्रमशः 05–05–2010 व 21–6–2011 के रुप में भारत सरकार द्वारा जारी आदेश हैं इन आदेशों के द्वारा देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालन को गति और ऊर्जा मिलती है, भारतवर्ष के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को संचालित होते रहने के लिये प्रदेश के चिकित्सा विभाग द्वारा बाकायदा 04 जनवरी, 2012 को शासनादेश जारी किया जा चुका है। यह आदेश प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये संजीवनी से कम नहीं है परन्तु एक अजीब सी हैरत होती है कि इतने अच्छे आदेशों का भी वह प्रभाव नहीं पड़ रहा है जो पड़ना चाहिये तीन वर्ष का समय लगभग खत्म हो रहा है लेकिन प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के मध्य जो उत्साह होना चाहिये वह अभी भी नज़र नहीं आ रहा है इससे जो परिदृश्य उभर कर सामने आता है वह कोई क्रान्तिकारी संदेश नहीं दे रहा है इस धीमी गति की प्रगति से मात्र चिकित्सक ही नहीं बल्कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े व्यक्तियों के मन में भी कोई खास परिवर्तन नहीं आ पा रहा है। यह मात्र एक राज्य का दृश्य नहीं है बल्कि पूरे देश की कमोबेश सिथति यही है, इन सारी बातों पर महज़ चिन्ता से काम नहीं चलने वाला है अपितु इस पर गम्भीरता से विचार कर एक दूरगामी निर्णय लेना चाहिये, यह निर्णय मात्र एक व्यक्ति, एक संगठन, एक संस्था को नहीं लेना है ऐसे निर्णय सामूहिक होने चाहिये देश में जितने भी वर्तमान व पूर्व इलेक्ट्रो होम्योपैथिक संस्था संचालक हैं उन सबको हर बिन्दु पर दृष्टि डालते हुये कोई ऐसा सर्व स्वीकार मार्ग निकालना चाहिये जिससे की इलेक्ट्रो होम्योपैथी का हित हो सके और विकास की गति आगे बढ़ सके। आज आप किसी भी राज्य के इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े व्यक्ति से बात कर लें चाहे वह चिकित्सक हो या संस्था संचालक उत्साह पूर्वक आपसे बात नहीं करेगा, यह समझने की बात है कि उत्साह के स्थान पर अनुत्साह ने स्थान क्यों ले लिया ?ऐसा नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये या लोगों को उत्साहित करने के लिये और चिकित्सकों को जागरुक करने के लिये लोगों द्वारा कार्य नहीं किया जा रहा है अब तो ऐसा लगता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिये पहले से ज़्यादा जागरुकता कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं यदि हम विभिन्न संगठनों द्वारा चलाये जा रहे अभियानों पर एक दृष्टि डालते हैं तो यही नज़र आता है कि कार्य तो किया जा रहा है। कार्य तो बहुत हो रहा है परन्तु जो परिणाम आने चाहिये वह अभी भी प्राप्त नहीं हो पा रहे हैं इससे हताश या निराश होने की आवश्यकता नहीं है परन्तु एक ऐसी व्यापक रणनीति बनानी चाहिये जिससे कि लोगों के मन में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के प्रति पुनः निष्ठा का भाव पैदा हो ऐसा होगा नहीं यह सम्भव नहीं है सिर्फ़ हमें और आपको अपने कार्य के प्रति और अधिकारों के प्रति अधिक सजग होना होगा कोई भी व्यक्ति जब पूरे मनोयोग से किसी भी कार्य को करता है तो उसे पूरा होने में कोई संदेह नहीं रहता है विलम्ब होना या असमायिक बाधायें आना यह सब तो सामान्य बातें हैं क्योकि किसी बड़े लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से कभी नहीं होती है और लक्ष्य की प्राप्ति नहीं हो यह सम्भव नहीं है। लेख का प्रारम्भ हमने अर्थ से किया था तो उसी बिन्दु पर हम पुनः आते हैं और हम अभी भी यही मानते हैं कि युग के परिवर्तन को देखते हुये कुछ ऐसे कदम उठाने चाहिये जिससे कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़ने वाला हर व्यक्ति यह महसूस करने लगे कि इस पद्धति से जुड़कर उसका भविष्य सुरक्षित है और वह अपना जीवन यापन ससम्मान आसानी से कर लेगा यह कहने में तो बड़ा ही आसान लगता है परन्तु यर्थाथ के धरातल पर उतारने के लिये हमें और आपको जी तोड़ मेहनत करनी

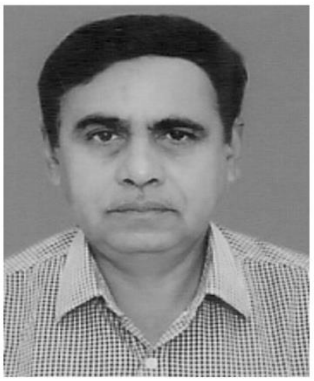

होगी किसी एक पीढ़ी को संघर्ष करना होता है तभी आने वाली पीढ़ी आनन्द ले पाती है वैसे संघर्ष का समय तो लगभग समाप्त सा हो गया है अब सिर्फ़ कार्य करने की आवश्यकता है आज हर चीज़ वैश्विक हो रही है इसलिये हमें हर निर्णय और हर कार्य परिस्थितियों को देखते हुये ही लेने चाहिये सफ़लता नहीं मिलेगी इस पर संन्देह नहीं करना चाहिये रास्ते साफ़ हैं कार्य करने के अवसर हैं और अच्छे अवसर बनते जा रहे हैं इसमें कोई भ्रम की स्थिति नहीं है यदि कहीं पर कोई कमी है,तो वह है हमारे चिकित्सकों के मध्य आत्म विश्वास की, जिस दिन यह आत्म विश्वास पुनर्जागृत हो गया उस दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी से जुड़े व्यक्ति अपने आपको किसी से भी कमतर नहीं आंकेंगे पर इस आत्मविश्वास को जागृत करने के लिये हर सम्भव प्रयास हो रहे हैं प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अधिकारिता जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है, अन्य संस्थाओं द्वारा भी सम्मेलनों के माध्यम से कुछ कार्य किये जा रहे हैं कुछ लोग मान्यता के लिये संघर्ष कर रहे हैं सभी का अपना–अपना दृष्टिकोंण है तभी तो सब अपने–अपने कार्य में लगे हैं परन्तु सफलता की कोई खबर अबतक नहीं आ पा रही है। एक बिन्दु जो सबसे महत्वपूर्ण है वह यह है कि ''इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिये''! इसमें आर्थिक उपलब्धता का दृष्टिकोंण भी अपनाना चाहिये सामान्य जन तक यह सन्देश पहुँचना चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी से भी जीवन यापन आसानी से हो सकता है जब यह सन्देश पहुँचेगा तो इसमें कोई दो राय नहीं है कि व्यक्ति आपसे नहीं जुड़े, कोई भी आन्दोलन तभी चल सकता है जब उसमें नये लोग जुड़ते जायें, वर्तमान समय को देखते हुये नये लोग तभी जुड़ते हैं जब वह उसमें अपना लाभ देखते हैं, सेवा, श्रद्धा जैसे शब्द अब अपनी परिभाषा बदल चुके हैं इसलिये नई परिभाषा के अनुसार ही आचरण होने चाहिये और व्यक्ति कुछ पाने की इच्छा करे क्यों ना ! मनुष्य का जीवन पाया है तो उसकी भी अभिलाषा होती है कि वह जीवन के हर सुःख को भोगे, कष्ट पाने के लिये या कष्टों से लड़ने वाली मानसिकता लुप्त तो नहीं हुयी है लेकिन संख्या बहुत कम है जब सुःख पाने के तमाम रास्ते खुले हैं तो काँटों में पैर कौन डालेगा ?इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी इस कदर उन्नत बनाना होगा कि युवा पीढ़ी स्वतः इस तरफ़ आकर्षित हो यह कहने में तो आसान लग रहा है लेकिन जो कार्य होने चाहिये वह मज़बूत मानसिकता वाला व्यक्ति ही कर सकता है। हमारे यहाँ मज़बूत मानसिकता के व्यक्तियों की कमी नहीं है यह बात ज़रुर है कि अभी भी भ्रम की स्थिति से बाहर निकल नहीं पा रहे हैं जैसे ही उन्होंने अपनी अधिकारिता को पहचाना उस समय इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कुछ भी नामुमकिन नहीं रहेगा इसी भ्रम की स्थिति को दूर करना हमारी प्राथमिकता है और हम इस क्षेत्र में धीरे–धीरे ही सही मगर सफ़ल हो रहे हैं, उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी बहुत ही मज़बूत स्थिति में है जो थोड़ी बहुत स्वनिर्मित कमी है वह भी दूर होती जा रही है सब बातों का एक ही सार है कि कार्य पूरे मनोयोग के साथ होना चाहिये क्योकि जब कार्य होगा तभी समाज और सरकार किये हुये कार्यों की समीक्षा करेगी जिसका कि भरपूर लाभ व्यक्ति को ही प्राप्त होगा। आज सबसे बड़ी समस्या है कि हमारा चिकित्सक कार्य तो कर रहा है लेकिन जिस उत्साह से वह पहले कार्य किया करता था उस उत्साह में काफ़ी कमी आयी है और आधे मन से किया गया कार्य कभी भी पूरे परिणाम नहीं देता है, पूरे परिणामों के लिये सकारात्मक दृष्टि के साथ ऊँचे मनोबल को लेकर कार्य करना होगा, जब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अपनी पूरी क्षमता से चिकित्सा व्यवसाय कर जनता को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे लेकिन इसमे पूरी पारदर्शिता होनी चाहिये, लिखने का आशय यह है कि रोगी को यह पता होना चाहिये कि वह किस विधा से चिकित्सा ले रहा है जब उसे लाभ होगा तो वह अन्य को भी बतायेगा कि मैने अमुक इलेक्ट्रो होम्योपैथ चिकित्सक से चिकित्सा करायी मुझे लाभ प्राप्त हुआ एक व्यक्ति दूसरे से, दूसरा तीसरे से और इस प्रकार एक श्रंखलाबद्ध प्रचार उस चिकित्सक को नाम और दाम दोनों प्रदान करेगा उसकी देखा देखी दूसरे चिकित्सक में भी उत्साह का भाव जगेगा और वह भी उसी राह पर चलने लगेगा जहाँ उसका साथी चल रहा है। धीरे–धीरे इसका प्रभाव सभी साथियों पर पड़ने लगेगा और वह समय पुनः आ जायेगा जिसकी हम सभी प्रतीक्षा कर रहे हैं। चिकित्सकों के इस उत्थान को देखकर युवा पीढ़ी जो अपने भविष्य के लिये योजनायें बनाती है वह युवा भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को व्यवसाय के रुप में चुनेंगे फिर जिस आन्दोलन की सफलता की हम कामना करते हैं उसे सफ़ल होने में देर नहीं लगेगी। तो आइग्ये हम सब मिलकर यह संकल्प लें कि हर चिकित्सक अपनी क्षमता व योग्यतानुसार पूरे मनोयोग से कार्य करेंगे और भावी जीवन को सुःखमय बनायेंगे, यदि हमारा चिकित्सक सुःखी है तो पूरा इलेक्ट्रो होम्योपैथी जगत प्रसन्न होता है काम करने के बहुत क्षेत्र हैं जैसे चिकित्सा,शिक्षा,औषधि निर्माण व साहित्य सृजन का, किसी भी क्षेत्र में हम अपनी क्षमताओं का प्रयोग करते हुये इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं । यह सारे कार्य हमारे चिकित्सकों को ही करने हैं इसलिये अब अनुत्साह के लिये मन में कोई स्थान नहीं होना चाहिये और पूरा व्यवसायिक दृष्टिकोंण अपनाते हुये कार्य को आगे बढ़ावें यही हमारी कामना है और आपसे अपेक्षा भी है कि आप कसौटी पर खरे उतरेंगे आज आवश्यकता है कि हर व्यक्ति अपनी–अपनी जिम्मेदारी समझे और उसी के अनुसार कार्य करे मात्र संस्थाओं पर आधारित रहने से कार्य नहीं चलने वाला है, संस्थायें आपको अधिकार दिलवाती हैं और उन अधिकारों को प्रयोग कर सही उपयोग चिकित्सक ही कर सकता है केवल बातों से काम चलने वाला नहीं है चिकित्सक एक प्रोफेशनल होता है इसलिये एक प्रोफ़ेशनल के लिये सफलता के जो आवश्यक गुण होते हैं वह गुण आप में भी होने चाहिये क्योंकि सफ़ल होने के लिये यह पहला मंत्र है कि धारा जिधर बह रही हो उधर ही बहो तभी सफलता भी मिलती है और वह सबकुछ अर्जित होता है जिसकी अपेक्षा हर किसी को होती है।

इसे हम क्या कहें ?हमारा इलेक्ट्रो होम्योपैथ व्यावसायिक तो है लेकिन जो व्यवसायिक दृष्टिकोंण होना चाहिये उसका सर्वथा अभाव है।

लुप्त होती ..... पेज 2 से आगे

ऑफ़ इण्डिया (इहमाई) के नाम है लेकिन इस काम को करवाने के लिये उन सब लोगों की प्रेरणा है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी से पूरे तौर पर जुड़े हुये हैं और संकल्पित भाव से इस विधा को आगे बढ़ाने में लगे हैं हम उन सभी लोगों के प्रति कृतज्ञ हैं जो हर विपरीत परिस्थिति में इस लड़ाई में हमारे साथ रहे अभी रास्ता बहुत लम्बा है और हमें भावनात्मक रुप से इससे जुड़ा रहना है यही भवनात्मक जुड़ाव हमें प्रेरणा देगा।

इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपनी ही पद्धति में करें प्रैक्टिस – डा0 अतीक अहमद, रजिस्ट्रार

प्रदेश का इलेक्ट्रो होम्योपैथ अपने ही चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करे पिछले कुछ दिनों से यह लगातार सूचनायें मिल रही है कि बहुत सारे चिकित्सक इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ साथ अन्य चिकित्सा पद्धतियां भी व्यवहार में ला रहे हैं। ऐसा कार्य करना अवैधानिकता की श्रेणी में आता है यह विचार बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने व्यक्त किये। डा0 अतीक अहमद ने बताया कि प्रदेश में एलोपैथी चिकित्सकों की कमी को देखते हुए प्रदेश सरकार ने आयुष चिकित्सकों को कुछ निर्धारित ऐलोपैथी दवाओं को प्रयोग करने के लिए अनुमति प्रदान की है लेकिन साथ साथ एक शासनादेश जारी कर यह भी स्पष्ट कर दिया है कि आयुष (आयुर्वेद एवं यूनानी) के इन चिकित्सकों द्वारा इंजेक्शन

नहीं लगाया जा सकता और न ही नसों के द्वारा औषधि दी जा सकती है साथ ही साथ सिर्फ 25 औषधियों के प्रयोग की ही अनुमति दी है वह भी आकस्मिक स्थिति में जब मान्यता प्राप्त चिकित्सकों के लिए इस प्रकार के आदेश हैं ऐसे में इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को चाहिये कि वे सिर्फ अपनी ही पद्धति में चिकित्सा व्यवसाय कर जनता की सेवा करें व विश्वास प्राप्त करें। सभी चिकित्सकों को यह जानकारी होनी चाहिये कि प्रदेश में सिर्फ एक मात्र संस्था बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ही है, जिससे पंजीकृत चिकित्सकों को ही प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा से चिकित्सा व्यवसाय करने की अनुमति प्राप्त है इसलिए ऐसे चिकित्सक जो दिशा भ्रमित हैं और अधिक से अधिक अर्थ दोहन के चक्कर में अन्य पद्धतियों का प्रयोग कर रहे हैं उन्हें अविलम्ब ऐसे अवैधानिक कार्य से विरत हो जाना चाहिये। डा0 अतीक अहमद ने कहा कि बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए प्रतिबद्ध है इसलिए वह ऐसा कोई भी कार्य स्वीकार नहीं करेंगी जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की छवि पर गलत प्रभाव डालती हो। उन्होंने ने कहा कि बोर्ड ने एक ऐसी टीम गठित की है जो पूरे प्रदेश के चिकित्सकों की चिकित्सा अभ्यास से सम्बन्धित गतिवि– धियों का निरीक्षण करेंगी। निरीक्षण के बाद जिन चिकित्सकों को अन्य चिकित्सा पद्धतियो में लिप्त पाया जायेगा उनके विरूद्ध नियमानुसार कार्यवाही की जायेंगी। इस आशय की सूचनायें बोर्ड द्वारा जारी की जा चुकी हैं।

क्या दे रहे हैं हमें सम्मेलन

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों की एकजुटता के नाम पर कभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को नया देने के नाम पर, कभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों को जागरूक करने के नाम पर पूरे देश में तरह तरह के अभियान चलाये जा रहे हैं विभिन्न संगठनों द्वारा पूरे देश में वर्ष पर्यन्त इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किये गये यदि हम इनकी समीक्षा करें और यह सोचें कि इससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी समाज को कौन सी नई दिशा मिलेगी और कितनी संख्या में इलेक्ट्रो होम्योपैथ जागरूक हुए ? यदि हम इन परिणामों पर आयेंगे तो कोई सुखद परिणाम नहीं प्राप्त होते हैं यह किसी संस्था या संगठन पर कटाक्ष नहीं है और न ही किसी संस्था के द्वारा किये गये किसी भी कार्य की कोई समीक्षा है। एक सच्चे इलेक्ट्रो होम्योपैथ होने के कारण हमारी यही कामना है कि आने वाले समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी स्थापित हो और इस चिकित्सा पद्धति को भी वही स्थान मिले जो अन्य चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों को प्राप्त है। यदि हम पूरे वर्ष के कार्यों पर एक विहंगम दृष्टि डालें तो एक बात स्पष्ट नज़र आती है कि इन प्रयासों से एकजुटता तो नहीं हुई है बल्कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी कई खेमों में बट गयी। एक वह वर्ग है जो अधिकार प्राप्त है और दूसरा वह वर्ग है जो इन अधिकारों से अपने आपको विलग मानता है और अपने लिए अधिकार प्राप्त करने के लिए प्रयासरत है।

इसी तरह अन्य लोग भी लगे हैं वर्ष 2015 की एक उपलब्धि जिसे पूरे देश में एक अनापत्ति प्रमाण पत्र के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है वह है 22 जनवरी, 2015 का माननीय सर्वोच्च न्यायालय का आदेश। इस आदेश का प्रस्तुतीकरण कुछ लोगों द्वारा जिस तरह से किया जा रहा है उसका जो प्रभाव पड़ रहा है, उस पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। उत्तर प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थापित करने के लिए जिस तेज़ी से और मज़बूती से कार्य किया जा रहा है उस पर परिणाम तो मिल रहे हैं लेकिन गति बहुत धीमी है उत्तर प्रदेश का एक ही विषय सबसे महत्वपूर्ण है वह है प्रदेश के इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों का जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में पंजीयन इस विषय पर लगातार प्रयास जारी हैं और यह हम उम्मीद कर सकते हैं कि वर्ष 2015 के जाते–जाते इस विषय पर अच्छे और सकारात्मक परिणाम अवश्य प्राप्त होंगे यदि ऐसा हो जाता है जिसके होने की सम्भावना प्रबल है। प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी और इलेक्ट्रो होम्योपैथों को अधिकारितापूर्वक कार्य करने का अवसर प्राप्त हो यही हमारा उद्देश्य है।

राष्ट्रीय स्तर पर भी 18 नवम्बर, 2015 को एक कार्यक्रम आयोजित कर दिल्ली सरकार से मांग की गयी कि माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा 18 नवम्बर, 1998 को इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक आदेश जारी किया गया था जो अभी तक दिल्ली राज्य में लागू नहीं हुआ इसकी मांग दिल्ली के मुख्यमंत्री माननीय अरविन्द केजरीवाल से करते हुए उन्हें इस आशय का ज्ञापन दिया गया जिसके परिणाम भी सकारात्मक आने के संकेत हैं। धीरे–धीरे वर्ष 2015 गुज़र रहा है हमें उम्मीद है कि जिस तरह वर्ष 2015 में प्रवेश करते ही इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए अच्छे संकेत आये थे उसी तरह वर्ष 2015 भी जाते–जाते कुछ अच्छे सन्देश देकर जायेगा।

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की सेमेस्टर परीक्षायें 28 दिसम्बर

बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 की सेमेस्टर परीक्षायें आगामी 28 दिसम्बर से प्रारम्भ होकर 31 दिसम्बर को समाप्त होंगी। सभी सेमेस्टर परीक्षायें एक पाली में होंगी। प्रवेशपत्र सम्बन्धित केन्द्रों को इस माह के दूसरे सप्ताह तक प्राप्त हो जायेंगे सम्बन्धित छात्र अपने केन्द्र से सम्पर्क करें। यह जानकारी बोर्ड के रजिस्ट्रार डा0 अतीक अहमद ने दी। परीक्षा कार्यक्रम निम्न प्रकार है।

BOARD OF ELECTRO HOMOEOPATHIC MEDICINE,U.P.

8-Lal Bagh, Kamla Sharma Marg, Lucknow-226001 E-mail registrarbehmup@gmail.com

PROGRAMME FOR ~~SEMESTER~~ EXAMINATIONDecember 2015

Name of the course	28 th. December 2015 Monday	29 th. December 2015 Tuesday	30 th. December 2015 Wednesday	31 st. December 2015 Thursday
F.M.E.H. 1st. Semester	Anatomy & Physiology	Pharmacy & Philosophy	X	X
F.M.E.H. 2nd. Semester	Pathology	Hygiene & Health	Environmental Science	X
F.M.E.H. 3rd. Semester	Opthalmology including E.N.T.	M. Jurisprudence and Toxicology	Dietetics	X
F.M.E.H. Final Semester	Obstetrics & Gynaecology	Materia Medica	Practice of Medicine	X
A.C.E.H.	Anatomy & Physiology	Pharmacy , Philosophy & Materia Med.	Pathology, Hygiene & Health, M.Jurisprudence& Toxico.	Midwifery Gynics,Opthalmology & Pract.of Med.

Timing > 10 : 00 A.M. to 01 : 00 P.M.

Ateeq Ahmad
Examination Incharge